

## रोमियों 8 सुसमाचार संदेश

(0:00 - 1:07)

नमस्कार सभी को। आज मैं आपसे रोमियों अध्याय 8 से बात करना चाहता हूँ, और मैं यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहता हूँ। सुसमाचार का अर्थ है "अच्छी खबर"।

यह सिर्फ एक संदेश नहीं है, बल्कि एक कहानी है कि कैसे परमेश्वर ने हमारी दुनिया में आकर हमें बचाया, हमें पुनर्स्थापित किया, और हमें एक नए जीवन की आशा दी। आज हम रोमियों 8 के माध्यम से इस अच्छी खबर को खोजेंगे। सबसे पहले मैं रोमियों 8 के कुछ शुरुआती वचनों को पढ़ना चाहता हूँ:

"अतः अब जो मसीह यीशु मैं हूँ, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। क्योंकि मसीह यीशु मैं जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।" (रोमियों 8:1-2)

(1:08 - 1:36)

क्या आपने कभी अपराधबोध महसूस किया है, क्योंकि आपने कुछ ऐसा किया जो आप जानते थे कि गलत था? शायद ऐसा कुछ जो आपको आज भी पछतावा देता है।

चाहे हम कितनी भी कोशिश कर लें, वह बोझ हटता नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम भीतर से जानते हैं कि हमने अपनी बुलाहट से नीचे गिरकर पाप किया है।

(1:37 - 3:32)

बाइबल पाप को एक सिद्धांत के रूप में बताती है, जहाँ हम उस आदर्श को प्राप्त करने में असफल रहते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किया है।

पाप केवल नियमों को तोड़ना नहीं है, यह परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को तोड़ना है। पवित्र और सिद्ध परमेश्वर के सामने, पाप हमें दोषी ठहराता है।

लेकिन अच्छी खबर यह है कि परमेश्वर ने हमें उस टूटे हुए अवस्था में नहीं छोड़ा।

रोमियों 8:1 कहता है, "अब जो मसीह यीशु मैं हूँ, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।"

क्यों? क्योंकि यीशु ने हमारी जगह दण्ड सह लिया।

- उसने वह सिद्ध जीवन जिया जिसे हम नहीं जी सके।
- उसने क्रूस पर उस दण्ड को सह लिया, जिसे हमें सहना था।
- और सबसे अच्छी खबर यह है कि वह मृतकों में से जी उठा, जिससे यह प्रमाणित हुआ कि पाप और मृत्यु पर अंतिम विजय यीशु की है।

अगर आप यीशु पर विश्वास करते हैं, तो आप दण्ड से मुक्त हैं। जब हम मसीह में बपतिस्मा लेते हैं, तो हम एक नई सृष्टि बन जाते हैं।

(3:34 - 5:06)

यह अच्छी खबर की शुरुआत है।

यीशु न केवल हमारे पापों को क्षमा करता है, बल्कि वह हमें बदलता भी है।

रोमियों 8:5 कहता है:

"जो शरीर के अनुसार चलते हैं, वे शरीर की बातों की ही सोचते हैं; परन्तु जो आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।"

यह दिखाता है कि जब आप यीशु पर विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर आपको अंदर से बदलता है।

- पवित्र आत्मा आपको नया जीवन और नई शक्ति देता है।
- यही आत्मा यीशु को मृतकों में से जीवित करने वाली शक्ति है।
- यह आत्मा आपके पापमय स्वभाव पर विजय दिलाती है और आपको सच्ची शांति प्रदान करती है।

(5:07 - 6:02)

यह खुद को अधिक मेहनत करके सुधारने की बात नहीं है, बल्कि परमेश्वर को आपके अंदर कार्य करने देने की बात है।

जो आत्मा यीशु को मृतकों में से जीवित कर सकती है, वह आपको भी नया जीवन दे सकती है।

सुसमाचार केवल आपको पाप के दण्ड से नहीं बचाता, यह आपको बदल भी देता है।

(6:03 - 7:36)

जो यीशु पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर उन्हें अपने परिवार में अपना लेता है।

रोमियों 8:15 कहता है:

"जिस आत्मा को तुम ने पाया है, वह तुम्हें फिर से दासत्व में नहीं डालता जिससे तुम डर में रहो, परन्तु वह तुम्हें लेपालक बना कर परमेश्वर को अब्बा पिता कहने की शक्ति देता है।"

सोचिए, परमेश्वर हमें अपने बच्चे कहता है!

अब आप बाहर के व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं।

और सबसे अद्भुत बात यह है कि, हम स्वर्गीय राज्य के उत्तराधिकारी बन जाते हैं।

(7:37 - 9:06)

तो क्या हमें परमेश्वर के प्रेम से कोई चीज़ अलग कर सकती है?

रोमियों 8:38-39 कहता है:

"न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है।"

परमेश्वर का प्रेम अटल और अखंडनीय है।

- जो कुछ आपने किया हो, या
- जो कुछ आप सह रहे हों,

इनमें से कुछ भी परमेश्वर के प्रेम को आपसे अलग नहीं कर सकता।

इस प्रेम को कमाने की ज़रूरत नहीं है, यह परमेश्वर की ओर से मुफ्त में दिया गया उपहार है।

जब यीशु क्रूस पर मरा, उसने अपने प्रेम की गहराई दिखाई। और जब वह मृतकों में से जी उठा, उसने यह सिद्ध कर दिया कि मृत्यु भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती।

👉 सुसमाचार वास्तव में सबसे अच्छी खबर है।

- ✓ यह हमें पाप के दण्ड से मुक्त करता है।
- ✓ यह हमें नया जीवन देता है।
- ✓ यह हमें स्वर्गीय राज्य का नागरिक बनाता है।
- ✓ यह हमें एक ऐसा प्रेम देता है, जो हमें हर परिस्थिति में शांति देता है।

✨ उद्धार परमेश्वर की देन है। इसे कमाने की ज़रूरत नहीं, बस यीशु पर विश्वास रखिए और इसे स्वीकार कीजिए।

आज, क्या आप यीशु पर भरोसा रखेंगे?

क्या आप उसे अपने जीवन में कार्य करने देंगे?

क्या आप पाप पर जय पाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे?